पश्चाताप - 6

अव्यक्त बापदादा (10.05.1972) :-

➳ _ ➳ **समर्थ की स्मृति** में रहते हुए कोई भी बोल बोलेंगे तो व्यर्थ नहीं बोलेंगे, ज्ञान-रत्न ही बोलेंगे। तो वृति को, बोल को भी चेक करो।

➳ _ ➳ कई ऐसे भी समझते हैं कि कर्म कर लिया, पचाताप कर लिया, माफी मांग ली, छुट्टी हो गई। लेकिन नहीं। **कितनी भी को माफी ले लेवे लेकिन जो कोई पाप कर्म वा व्यर्थ कर्म भी हुआ तो उसका निशान मिटता नहीं। निशान पड़ ही जाता है।** रजिस्टर साफ स्वच्छ नहीं होता। इसलिए ऐसे भी नहीं कहना कि हो गया, माफी ले ली। इस रीति रसम को भी नहीं अपनाना।

➳ _ ➳ अपना कर्तव्य है-संकल्प में, वृति में, **स्मृति में भी कोई पाप का संकल्प न आये, इसको ही कहा जाता है ब्राह्मण अर्थात् पवित्र।** अगर कोई भी अपवित्रता वृति, स्मृति वा संकल्प में है तो ब्राह्मण-पन की स्थिति में स्थित हो नहीं सकते, सिर्फ कहलाने मात्र हो। इसलिए कदम-कदम पर सावधान रहो।

➢➢ 3 P's

➳ _ ➳ (P)aap

- → Direct
  - ■ Visible
- → Indirect
  - ■ Invisible
- → पाप अब छोटा है... उसे क्रूरता से वहीँ ख़तम कर दो

➳ _ ➳ (P)aschataap

- → जूठा
- → सच्चा
  - ■ फिर से पाप कर्म नहीं होगा
  - ■ मन आत्म ग्लानी से भर जाएगा

➳ _ ➳ (P)ardon

- → माफ़ी मांगने से हम और बड़े हो जाते हैं

➢➢ पवित्रता के 3 स्तम्भ

➳ _ ➳ संकल्प (Thought) की पवित्रता

- → संकल्प मैले होने लगते हैं क्योंकि
  - ■ महान और पवित्र संकल्पों का अकाल पड़ गया है

- कुछ अधयन्न ही नहीं कर रहे हैं

➳ _ ➳ स्मृति (Awareness) की पवित्रता

→ नयी शुद्ध स्मृतिया डालते जाओ

- पुरानी अपवित्र स्मृतिया निकलती जायेंगी

➳ _ ➳ वृत्ति की पवित्रता